चलते चलते मेरे ये गीत याद रखना

डा विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
v1sukhwani@gmail.com

भारतीय फिल्म संगीत के इतिहास में कुछ संगीतकार ऐसे हुए हैं जिन्होंने केवल यादगार धुनें ही नहीं बनाईं, बल्कि अपने समय के संगीत का ट्रेंड ही बदल दिया. आलोकेश लाहिड़ी (लोकप्रिय नाम - बप्पी लाहिड़ी), ऐसे ही विलक्षण संगीतकार और गायक थे. भारतीय संगीत जगत में जब भी 'डिस्को' और सिंथेसाइजर बीट्स की बात होती है, तो सबसे पहला नाम बप्पी लाहिड़ी का आता है. 80 और 90 के दशक में भारतीय श्रोताओं को वेस्टर्न संगीत, पॉप और डिस्को की धुन पर थिरकने का मजा देने वाले बप्पी दा एक अद्वितीय संगीतकार और गायक थे. उन्होंने हिंदी सिनेमा में डिस्को संगीत को लोकप्रियता की नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया.आज जब भारतीय संगीत में इलेक्ट्रॉनिक बीट्स, डांस म्यूजिक और फ्यूजन सामान्य बात है, तब बप्पी लाहिड़ी का शुरुआती योगदान और भी महत्वपूर्ण हो जाता है. उनका जन्म पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ी में एक संगीतमय परिवार में हुआ था. उनके पिता अपरेश लाहिड़ी और माता बांसुरी लाहिड़ी दोनों ही बंगाली संगीतकार और गायक थे. महज 3 साल की उम्र से उन्होंने तबला बजाना सीख लिया था और किशोरावस्था में ही संगीत निर्देशन की दिशा में कदम बढ़ा दिए थे. भारतीय शास्त्रीय संगीत के साथ-साथ पश्चिमी संगीत में भी उनकी गहरी रुचि थी. आगे चलकर रुचियों का यही मिश्रण उनके संगीत की एक महत्वपूर्ण पहचान बना.

70 के दशक में हिंदी सिनेमा में कदम रखने के बाद बप्पी दा ने 'नन्हा शिकारी' (1973), 'ज़ख्मी' (1975) और 'चलते-चलते' (1976) जैसी फिल्मों से अपनी पहचान बनाई. फ़िल्म 'ज़ख्मी' में 'आओ तुम्हे चांद पे ले जाएं' और 'जलता है जिया मेरा भीगी भीगी रातो में' और 'जख्मी दिलों का बदला चुकाने' जैसे गीत लोकप्रिय खूब हुए. फिल्म 'चलते चलते' का किशोर कुमार की आवाज में यादगार शीर्षक गीत 'चलते चलते मेरे ये गीत याद रखना' आज भी फ़िल्मी गीतों के श्रोताओं में अमिट पहचान बनाए हुए है. फिर वर्ष 1982 में आई फिल्म 'डिस्को डांसर' जो बप्पी लाहिड़ी के करियर का निर्णायक मोड़ साबित हुई. इस फ़िल्म ने उनके करियर और तत्कालीन भारतीय संगीत के ट्रेंड को बदल के रख दिया. इस फिल्म का संगीत युवाओं के बीच जबरदस्त लोकप्रिय हुआ. 'आई एम अ डिस्को डांसर', 'जिमी जिमी आजा आजा' और 'याद आ रहा है' जैसे गीतों ने भारतीय फ़िल्म संगीत को एक नई दिशा दी. 'डिस्को डांसर' की सफलता केवल भारत तक सीमित नहीं रही. इसके गीत सोवियत संघ, चीन और कई अन्य देशों में भी लोकप्रिय हुए. इस फिल्म ने बप्पी लाहिड़ी को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और बाद के वर्षों में उनके संगीत को अंतरराष्ट्रीय कलाकारों और निर्माताओं ने भी नए रूप में इस्तेमाल किया.

बप्पी लाहिड़ी ने अपने 48 साल के करियर में 500 फिल्मों में 5000 से ज्यादा गाने कंपोज किए, उन्होंने हिंदी, बंगाली, तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, गुजराती, मराठी, पंजाबी, उड़िया, भोजपुरी, आसामी भाषाओं के साथ-साथ बांग्लादेश की फिल्मों और अंग्रेजी गानों को भी कंपोज किया. 'चलते चलते', 'ज़ख्मी', 'डिस्को डांसर', 'शराबी', 'नमक हलाल', 'डांस डांस', 'कमांडो', 'थानेदार', 'हिम्मतवाला', 'कसम पैदा करने वाले की', 'तोहफा' 'मकसद', 'लहू के दो रंग', 'पतिता', 'सुरक्षा', 'गिरफ्तार', 'हथकड़ी', 'आँखें', 'दलाल', 'मोहब्बत', 'साहेब', 'मवाली', 'शोला और शबनम', 'ऐतबार', 'आज का अर्जुन', 'जिंदगी एक जुआ', 'डर्टी पिक्चर' उनके संगीत से सजी यादगार फिल्में हैं. विशेष रूप से 'शराबी' और 'नमक हलाल' का संगीत उनकी रचनात्मक क्षमता के सुंदर उदाहरण हैं . फ़िल्म 'शराबी' के 'दे दे प्यार दे', 'जहाँ चार यार मिल जाएँ', 'मुझे नौलखा मंगा दे रे', 'मंज़िले अपनी जगह हैं' जैसे गीत आज भी श्रोताओं को दीवाना बना देते हैं. इसी प्रकार फ़िल्म 'नमक हलाल' के गीत 'पग घुंघरू बांध मीरा नाची थी', 'जवानी जानेमन हसीन दिलरुबा', 'थोड़ी सी जो पी ली है', 'रात बाकी बात बाकी' अत्यंत लोकप्रिय हुए . उनके संगीतबद्ध अन्य प्रमुख गानों में 'प्यार में कभी कभी' (चलते चलते), 'आई एम ए डिस्को डांसर' (डिस्को डांसर), 'यार बिना चैन कहां रे' (साहेब), 'तम्मा तम्मा लोगे' (थानेदार), 'याद आ रहा है तेरा प्यार' (डिस्को डांसर'), हरि ओम हरि' (प्यारा दुश्मन) और

'रम्बा हो संबा हो' (अरमान) आदि शामिल हैं .

1980 के दशक में बप्पी लाहिड़ी का नाम डिस्को संगीत का पर्याय बन गया. उन्हें प्यार से 'डिस्को किंग' कहा जाने लगा. बप्पी दा ने पश्चिमी डिस्को की ऊर्जा को भारतीय फिल्मी संगीत की भावनात्मकता और लय के साथ जोड़ा. सिंथेसाइज़र, इलेक्ट्रॉनिक बीट्स, ड्रम मशीनों और आधुनिक रिकॉर्डिंग तकनीक का इस्तेमाल करते हुए उन्होंने ऐसा संगीत तैयार किया जो उस समय के युवाओं को आकर्षित करता था. बप्पी लाहिड़ी और मिथुन चक्रवर्ती की जोड़ी ने 80 के दशक में हिंदी सिनेमा के डिस्को दौर को नई पहचान दी. 'डिस्को डांसर', 'डांस डांस' और अन्य कई फिल्मों में बप्पी दा का संगीत और मिथुन की नृत्य शैली एक-दूसरे के पूरक बन गए. मिथुन के नृत्य और बप्पी दा की धुनों ने मिलकर युवाओं के बीच एक नई सांस्कृतिक लहर पैदा की. बप्पी लाहिड़ी उन संगीतकारों में थे जिन्होंने तकनीकी बदलावों को खुलकर अपनाया. इलेक्ट्रॉनिक इंस्ट्रूमेंट्स और आधुनिक रिकॉर्डिंग तकनीक के प्रयोग से उन्होंने पश्चिमी पॉप और डिस्को की तकनीक को भारतीय फिल्म संगीत के ढाँचे में ढाल दिया. यह प्रयोग आगे जाकर फिल्म संगीत में इलेक्ट्रॉनिक और सिंथेसाइज़र आधारित संगीत के इस्तेमाल का आधार बना.

गौरतलब है कि अक्सर बप्पी लाहिड़ी को एक डिस्को संगीतकार के रूप में याद किया जाता है, लेकिन उनको केवल 'डिस्को किंग' कह देना उनके योगदान को सीमित कर देना होगा. उनका संगीत संसार इससे कहीं अधिक व्यापक था. उन्होंने रोमांटिक गीत, दर्द भरे गीत, भक्ति संगीत, लोकधुनों पर आधारित रचनाएँ और शास्त्रीय रंग वाली धुनें भी तैयार की. उन्होंने 'ऐतबार' फ़िल्म के लिये 'किसी नज़र को तेरा इंतेज़ार आज भी है' और 'आवाज़ दी है' जैसी यादगार गज़लें भी कंपोज़ की हैं. उनके संगीत में एक ओर आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक ध्वनियाँ थीं, तो दूसरी ओर भारतीय लोक और शास्त्रीय संगीत की जड़ें भी मौजूद थीं. इससे यह स्पष्ट है कि वे केवल तेज बीट वाले गीतों के संगीतकार नहीं थे, बल्कि भावनात्मक और मधुर धुनें रचने की क्षमता भी रखते थे. उनकी धुनों ने न केवल श्रोताओं के कानों को आनंद दिया, बल्कि लोगों को नाचने के लिए भी मजबूर किया.

बप्पी दा अपने संगीत के अलावा गले में मोटी-मोटी सोने की चेन, हाथों में अंगूठियां और चश्मा पहनने के अपने स्टाइल के लिए मशहूर थे. दरअसल वे अमेरिकी पॉप स्टार एल्विस प्रेसली से काफी प्रभावित थे और सोने को अपने लिए बेहद भाग्यशाली मानते थे. हालाँकि यह बाहरी रूप उनकी लोकप्रिय छवि का हिस्सा था, लेकिन उनके पीछे एक बेहद अनुशासित और संगीत के प्रति समर्पित कलाकार मौजूद था. वे जानते थे कि लोकप्रिय संस्कृति में संगीतकार की व्यक्तिगत पहचान भी लोगों से जुड़ाव पैदा करती है. बप्पी लाहिड़ी की आवाज़ भी उनकी विशिष्ट पहचान थी. उन्होंने स्वयं अपने संगीत निर्देशन में कई गीत गाए. उनकी गायकी में पारंपरिक गायक जैसी गंभीरता के बजाय एक अलग तरह की ऊर्जा, उत्साह और मंचीय आकर्षण था. उनके गाए गीतों में उनकी विशिष्ट आवाज़ और अंदाज़ सुनाई देते हैं. 'बम्बई से आया मेरा दोस्त' (आप की खातिर), 'जाना कहां है' (चलते चलते), 'जिमी जिमी जिमी आजा', 'ओउवा ओउवा कोई यहां नाचे', 'याद आ रहा है' (डिस्को डांसर), 'यार बिना चैन कहां रे' (साहेब), 'तम्मा तम्मा लोगे' (थानेदार), 'दिल में हो तुम आँखों में तुम' (सत्यमेव जयते), तूं मारी एंट्रियां (गुंडे), 'ऊ ला ला' (डर्टी पिक्चर) आदि उनके गाये प्रमुख गीत हैं.

1990 के दशक में संगीत की प्रवृत्तियाँ बदलने लगीं. फिर भी बप्पी लाहिड़ी ने स्वयं को बदलते समय के साथ जोड़े रखा. उन्होंने फिल्मों के साथ-साथ स्वतंत्र संगीत और टेलीविजन के क्षेत्र में भी काम किया और अपने संगीत को नए दौर की ध्वनियों से जोड़ा. उनकी लोकप्रियता केवल पुराने गीतों तक सीमित नहीं रही, उन्होंने नई पीढ़ी के कलाकारों के साथ उन्होंने काम किया. उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि उन्होंने अपने समय की संगीत-भाषा को पहचाना और उसे अपनी विशिष्ट शैली में प्रस्तुत किया. उन्हें उनके करियर में अनेक पुरस्कार और सम्मान मिले.1986 में उन्होंने एक ही साल में 33 फिल्मों के लिए 180 गाने रिकॉर्ड करने का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया.1984 में फ़िल्म 'शराबी' के लिये उन्हें बेस्ट म्यूजिक डायरेक्टर के फ़िल्म फेयर पुरस्कार से नवाज़ा गया था साथ ही 2018 में उन्हें फिल्मफेयर लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से भी नवाजा गया. साल 2018 में ही भारत सरकार द्वारा उन्हें पद्म श्री से भी सम्मानित किया गया था .

15 फरवरी 2022 को 69 वर्ष की आयु में मुंबई में 'ऑब्सट्रक्टिव स्लीप एपनिया' नाम की बीमारी के कारण उनका निधन हो गया. उनका आखिरी फ़िल्मी गीत, साल 2020 की फिल्म 'बागी 3' का 'भंकस' था. उनके निधन से भारतीय फिल्म संगीत ने एक ऐसे कलाकार को खो दिया जिसने लोकप्रिय फ़िल्म संगीत को एक नई दिशा दी, लेकिन निश्चित ही अन्य महान कलाकारों की तरह बप्पी दा अपने संगीत के माध्यम से आज भी जीवित हैं. उनका संगीत समय की सीमाओं से परे जाकर आज भी अपनी चमक बनाए हुए है. आज के लिये इतना ही, अगले सप्ताह फिर मुलाक़ात होगी, तब तक बप्पी लाहिड़ी साहब का यादगार संगीत सुनिए और हमेशा खुश रहिये, हसते रहिये, मुस्कराते रहिये .....!!

वरुण धवन ने खेत में की रोपाई-गुड़ाई

अभिनेता के इस देसी रूप को फैंस खूब पसंद कर रहे हैं और कमेंट सेक्शन में उनकी जमकर तारीफ कर रहे हैं . वरुण की यह पोस्ट यह भी दिखाती है कि व्यस्त फिल्मी जिंदगी के बीच उन्हें प्रकृति और खेती से जुड़ने का मौका कितना पसंद है .

वरुण धवन ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि ग्लैमर की दुनिया से जुड़े होने के बावजूद उन्हें जमीन से जुड़े रहना पसंद है. अभिनेता ने अपने खेत से तस्वीरें साझा की हैं, जिनमें वह खेती के काम में हाथ बंटाते नजर आ रहे हैं. इन तस्वीरों में वरुण का अंदाज बिल्कुल अलग दिखाई दे रहा है.

फिल्मों में अलग-अलग किरदार निभाने वाले अभिनेता यहां किसान की तरह खेत में काम करते नजर आए. रोपाई और गुड़ाई करते हुए उनकी तस्वीरों ने सोशल मीडिया पर प्रशंसकों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया. वरुण ने कुछ समय पहले अपने खेत के बारे में जानकारी दी थी. इसके बाद अब खेत में काम करते हुए तस्वीरें साझा करना उनके फैंस के लिए खास रहा. सोशल मीडिया पर पोस्ट सामने आते ही प्रतिक्रियाओं का सिलसिला शुरू हो गया. कई प्रशंसकों ने अभिनेता की सादगी की तारीफ की, जबकि कुछ ने उनके इस अंदाज को बेहद प्रेरणादायक बताया. वरुण की तस्वीरों में खेत, मिट्टी और खेती से जुड़ी गतिविधियों के बीच उनका सहज अंदाज नजर आ रहा है. यही वजह है कि उनकी यह पोस्ट बाकी ग्लैमरस सोशल मीडिया तस्वीरों से अलग दिखाई दे रही है.

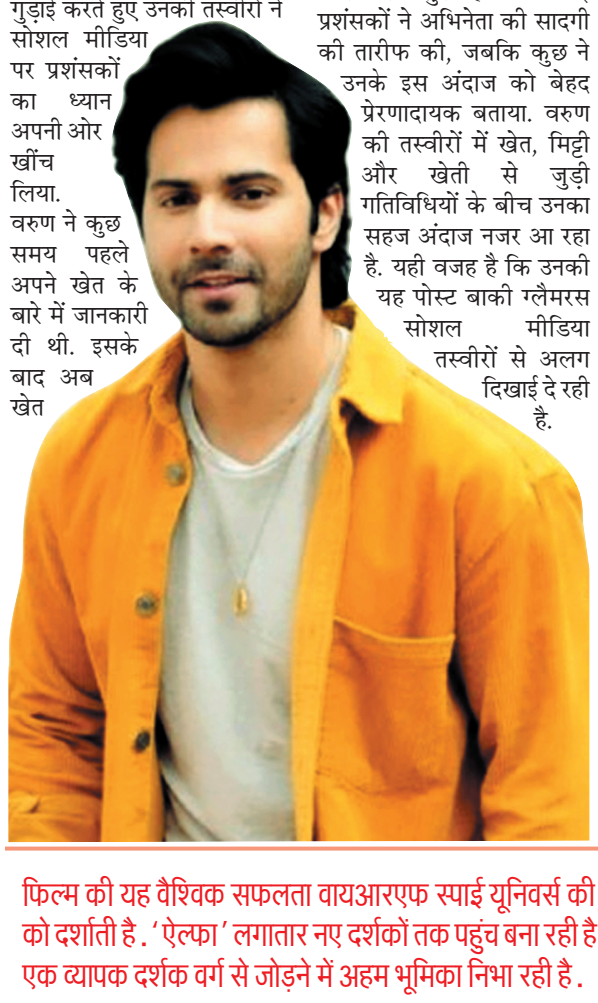

प्रियंका ने खोला अपने मोहब्बत सफर का राज़

9 साल पुरानी कहानी आई सामने

प्रियंका चोपड़ा और निक जोनस की प्रेम कहानी में एक बार फिर पुरानी यादों की खुशबू लौट आई है. प्रियंका ने अपने हालिया सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए निक के साथ रिश्ते के शुरुआती दिनों को याद किया और कुछ अनदेखी रोमांटिक तस्वीरें प्रशंसकों के साथ साझा कीं. इन तस्वीरों के सामने आते ही दोनों की प्रेम कहानी को लेकर एक बार फिर चर्चा शुरू हो गई. प्रियंका और निक ने साल 2018 में शादी की थी, लेकिन दोनों की कहानी इससे काफी पहले शुरू हो चुकी थी. दोनों के बीच बातचीत का सिलसिला साल 2017 में शुरू हुआ था.

इसी दौरान प्रियंका ने निक को अपना नंबर दिया था और दोनों के बीच बातचीत आगे बढ़ी. शुरुआत में यह रिश्ता दोस्ती और बातचीत से आगे बढ़ा, लेकिन धीरे-धीरे दोनों एक-दूसरे के करीब आते गए. इसके बाद मुलाकातों और डेटिंग का दौर शुरू हुआ और देखते ही देखते रिश्ता इतना मजबूत हो गया कि दोनों ने शादी का फैसला कर लिया. साल 2018 में प्रियंका और निक ने राजस्थान में भव्य शादी रचाई. इसके बाद दोनों ने विदेश में अपनी जिंदगी की नई शुरुआत की. आज दोनों एक बेटी के माता-पिता हैं और अक्सर सोशल मीडिया पर परिवार से जुड़े खूबसूरत पल साझा करते हैं. प्रियंका का हालिया पोस्ट उस दौर की याद दिलाता है, जब उनकी और निक की प्रेम कहानी ने पहली बार आकार लेना शुरू किया था. यही वजह है कि फैंस के लिए यह पोस्ट महज तस्वीरों का संग्रह नहीं, बल्कि उनकी पसंदीदा सेलिब्रिटी जोड़ी की प्रेम कहानी के शुरुआती अध्याय की झलक बन गई है.

कब शुरू हुआ प्रियंका-निक की बातचीत का सिलसिला

प्रियंका चोपड़ा और निक जोनस के रिश्ते की शुरुआत साल 2017 में हुई थी. यानी दोनों की शादी से करीब एक साल पहले बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ. प्रियंका ने निक को अपना नंबर दिया था, जिसके बाद दोनों के बीच बातचीत बढ़ी. धीरे-धीरे दोस्ती ने डेटिंग का रूप लिया और दोनों एक-दूसरे के करीब आते गए. साल 2018 में इस रिश्ते को शादी के मुकाम तक पहुंचाया गया. अब दोनों अपनी बेटी मालती के साथ पारिवारिक जिंदगी का आनंद ले रहे हैं.

गांधारी के लिए तापसी ने की दमदार तैयारी

किरदार में जान डालने के लिए अभिनेत्री ने अपनाया खास तरीका

तापसी पन्नू की फिल्म 'गांधारी' को लेकर दर्शकों की उत्सुकता लगातार बढ़ रही है. फिल्म की कहानी में एक मां के संघर्ष, भावनाओं और अपने बच्चे को बचाने के जुनून को केंद्र में रखा गया है. इस चुनौतीपूर्ण भूमिका को पर्दे पर प्रभावी बनाने के लिए तापसी ने अपनी तैयारी में कोई कमी नहीं छोड़ी. अभिनेत्री ने किरदार की भावनात्मक स्थिति को समझने के साथ-साथ उसके शारीरिक पक्ष पर भी काम किया. फिल्म में एक्शन की भूमिका अहम होने के कारण तापसी ने अपने शरीर को एक्शन दृश्यों के लिए तैयार किया और प्रशिक्षण पर ध्यान दिया. उनका मकसद सिर्फ एक्शन को पर्दे पर दिखाना नहीं, बल्कि हर दृश्य में किरदार की बेचैनी, गुस्सा और मां की मजबूती को महसूस कराना था. तापसी के लिए यह भूमिका इसलिए भी खास है क्योंकि इसमें उन्हें एक ऐसी महिला का किरदार निभाना है, जिसके लिए उसका बच्चा ही उसकी सबसे बड़ी प्राथमिकता है. कहानी आगे बढ़ने के साथ यही भावनात्मक जुड़ाव उसके संघर्ष को ताकत देता है. अभिनेत्री ने किरदार की मानसिकता को समझने के लिए उसकी परिस्थितियों पर भी ध्यान दिया, ताकि पर्दे पर उनकी प्रतिक्रिया बनावटी न लगे. एक्शन दृश्यों में विश्वसनीयता लाने के लिए उन्होंने शारीरिक तैयारी के साथ तकनीकी पहलुओं पर भी काम किया. यही वजह है कि 'गांधारी' में तापसी का लुक और अंदाज उनके प्रशंसकों के लिए नया अनुभव हो सकता है.

टेलीविजन हलचल

अनुपम-त्रिप्ति की वापसी से लौटी यादें

क्योंकि सास भी कभी बहू थी' के दूसरे सीजन में कहानी लगातार नए मोड़ ले रही है . 400 एपिसोड पूरे करने के बाद शो के मौजूदा ट्रैक में पुराने किरदारों और रिश्तों को फिर से जोड़ा जा रहा है . अनुपम कपाड़िया के किरदार की वापसी और त्रिप्ति के रूप में सुवर्णा झा की एंट्री ने दर्शकों को पुराने दौर की याद दिला दी है . हालांकि, इस नॉस्टैल्जिया के बीच प्रशंसकों की सबसे बड़ी मांग अब भी मिहिर विरानी यानी अमर उपाध्याय को वापस लाने की है . शो में मिहिर की वापसी को लेकर खबरें काफी समय से चल रही हैं, लेकिन कहानी में उनकी एंट्री अब तक साफ नहीं हुई है . मौजूदा ट्रैक में एक नकाबपोश व्यक्ति दिखाई दे रहा है, जिसकी अंगूठी मिहिर की अंगूठी से मिलती-जुलती है . कभी कहानी इस ओर इशारा करती है कि वह मिहिर हो सकता है, तो कभी ऐसा लगता है कि यह कोई नया किरदार है . लंबे समय से चल रहे इस रहस्य ने कुछ दर्शकों की उत्सुकता बनाए रखी है, लेकिन अब इंतजार उन्हें थोड़ा लंबा लगने लगा है . इस बीच मेकर्स पार्ट और त्रिप्ति के रिश्ते समेत दूसरे ट्रैक के जरिए कहानी को आगे बढ़ा रहे हैं .

अनुपमा से प्रेम ने मांगी माफी, आया नया ट्विस्ट

अनुपमा' में प्रेम और अनुपमा के रिश्ते ने आखिरकार एक ऐसा मोड़ लिया है, जिसका दर्शकों को लंबे समय से इंतजार था . लगातार तकरार, आरोप और गलत व्यवहार के बाद प्रेम अब अपनी गलतियों को स्वीकार करता नजर आ रहा है . वह अनुपमा के सामने झुककर उनसे माफी मांगता है और अपनी पिछली गलतियों के लिए पछतावा जताता है . प्रेम का यह बदला हुआ अंदाज अनुपमा को भावुक कर देता है . अपने दामाद को दोबारा अपने करीब पाकर अनुपमा भी बेहद खुश होती हैं . इसके बाद परिवार में खुशियों का माहौल बन जाता है और रक्षाबंधन का त्योहार भी मिल-जुलकर मनाया जाता है . कहानी में असली ट्विस्ट तब आता है, जब प्रेम बिजनेस को लेकर एक बड़ा फैसला लेता है . वह अनुज के कैफे को 'लव यू जिंदगी कैफे' के साथ जोड़ने की घोषणा करता है .

फिल्म की यह वैश्विक सफलता वायआरएफ स्पाई यूनिवर्स की बढ़ती अंतरराष्ट्रीय लोकप्रियता को दर्शाती है . 'ऐल्फा' लगातार नए दर्शकों तक पहुंच बना रही है और फ्रेंचाइजी को दुनिया भर में एक व्यापक दर्शक वर्ग से जोड़ने में अहम भूमिका निभा रही है .

यश राज फिल्म्स के स्पाई यूनिवर्स की नवीनतम फिल्म और पहली फीमेल-लीड स्पाई थ्रिलर 'ऐल्फा' ने नेटफ्लिक्स पर अपनी मजबूत मौजूदगी दर्ज कराई है। आलिया भट्ट और शर्वरी अभिनीत यह फिल्म शिव रवैल के निर्देशन में बनी और यश राज फिल्म्स द्वारा निर्मित 'ऐल्फा' दो एलीट एजेंट्स की कहानी है, जो एक हाई-स्टेक्स मिशन पर निकलती हैं. फिल्म में बॉबी देओल और अनिल कपूर भी महत्वपूर्ण भूमिकाओं में हैं. फिल्म को दर्शकों से इसके जबरदस्त एक्शन, भव्य पैमाने और आलिया

नेटफ्लिक्स की ग्लोबल टॉप 10 नॉन-इंग्लिश फिल्मों की सूची में तीसरे स्थान पर पहुंच गई है, जबकि भारत में यह पहले नंबर पर ट्रेंड कर रही है.

नेटफ्लिक्स ग्लोबल टॉप 10 में तीसरे नंबर पर ऐल्फा

भट्ट-शर्वरी की फ्रेश पेयरिंग के लिए शानदार प्रतिक्रिया मिल रही है. नेटफ्लिक्स पर रिलीज के बाद 'ऐल्फा' भारत के मूवीज चार्ट में शीर्ष स्थान पर है और कई अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भी टॉप 10 में जगह बना चुकी है.

सिद्धार्थ-तमन्ना की नई जोड़ी

'समझो ना' में दिखेगा प्यार

सिद्धार्थ मल्होत्रा और तमन्ना भाटिया अभिनीत फिल्म 'द वन' का पहला गाना 'समझो ना' जल्द रिलीज होने वाला है. फिल्म के टीजर में रहस्य, लोककथाओं, रहस्यमयी जंगलों और अलौकिक शक्तियों की दुनिया की झलक दिखाने के बाद अब निर्माता कहानी के रोमांटिक पहलू को सामने लाने जा रहे हैं.

'समझो ना' में सिद्धार्थ और तमन्ना पहली बार एक साथ नजर आएंगे. गाने में दोनों की केमिस्ट्री प्रमुख आकर्षण होगी. अब तक फिल्म के प्रचार में जहां रहस्य और रोमांच पर जोर दिया गया है, वहीं यह गीत दोनों मुख्य किरदारों के रिश्ते और भावनात्मक पक्ष को सामने लाएगा. तनिष्क बागची ने गाने का संगीत तैयार किया है और इसे अपनी आवाज जुबिन नौटियाल तथा सुवर्णा तिवारी ने दी है. गीत के बोल मनोज मुंतशिर ने लिखे हैं, जबकि कृष्णा किशोर ने अतिरिक्त लाइव संगीत तैयार किया है. संगीत का मिश्रण और अंतिम रूप देने का काम एरिक पिल्लई ने किया है.

फिल्म में लोककथा और कल्पना से भरी दुनिया के साथ रोमांस, रहस्य, रोमांच और हास्य का मेल देखने को मिलेगा. 'द वन' के जरिए भारतीय लोककथाओं को नए सिनेमाई अंदाज में पेश करने की कोशिश की गई है.